केरल की हिन्दी कविता में चित्रित राजनीतिक व्यंग्य

सुजित एन तंपी *

1.1.प्रस्तावना

जब भारत गुलामी से आज़ाद हो कर नएसंविधान के आधार पर जिन नवीन सपनों को साकार करना चाहा वह अभी तक अधूरा एवं जटिल बनकर रह गया है। भारत में प्रजातांत्रिक व्यवस्थालागू हो गया है। किन्तु आम आदमी को उस परिवर्तन का फायदा नहीं मिल रहा है।राजनीतिक दलों से भारत में रामराज्य की स्थापना करने की बात को सब कहीं कह रही है परंतु रामराज्य कहीं दिखाता नहीं । ऐसे विसंगतिपूर्ण एवं दूषित स्थितियों से अवगत करा कर इनका पर्दाफाश करके इनसे लडने केलिए साहित्य में एक नया उपाय स्वीकार किया गया जिसे हम व्यंग्य कहते हैं ।व्यंग्य का फलक व्यापक है।व्यंग्य के निर्माण के लिए समाज के सभी क्षेत्रों से विषय का चयन किया जाता है ।समाज में फैली राजनैतिक,सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक, शैक्षिक आदि सभी स्तरों की विकृतियों की पोल खोलना व्यंग्य की उपयुक्तता है । व्यंग्य विधा में अधिकतर राजनीति के भ्रष्ट पक्षों पर प्रकाश डाला गया है ।

1.2. राजनीतिक व्यंग्य

मानव के मानसिक एवं शारीरिक तनावों से मुक्ति केलिए हास्य की आवश्यकता होती है। हास्य-विनोद की ओर मानव का आकर्षण एक सामाजिक गुण है। अत: व्यंग्य जीवन का शाश्वत एवं प्रमुख स्वर है। समाज के युगीन विसंगतियों की वक्रोक्तिपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति व्यंग्य कहलाता है। भारतीय काव्यशास्त्रों में व्यंग्य को ध्वनि के अंतर्गत रखा गया है। व्यंग्य को अंग्रेज़ी में सटायर

* असिस्टेंट प्रोफेसर, गवेरमेण्ड आर्डस एण्ड सयेंस कालेज, कोझ़िक्कोड, केरल -673018.

(SATIRE) कहते हैं, जो लैटिन शब्द सैतुरा(SATURA) से विकसित हुआ है। डॉ.राधेश्याम वर्मा के अनुसार "आज व्यंग्य शब्द का प्रयोग उस अर्थ में होता है, जिसमें व्यक्ति या समाज की विकृतियों, विद्रूपताओं को सामान्य शब्दों में प्रकट न करके, विशिष्ट भंगिमा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, जो राजनीतिक, आर्थिक,धार्मिक, नैतिक आदि विभिन्नप्रकार की विसंगतियों, अंतर्विरोध, असमंजस, अन्याय, अत्याचारों, अनाचारों, आडंबरों को स्वीकार करके विविध उपहास्य एवं घृणोत्पादक तरीके पर आलोचनात्मक ढंग से चोट करता है।"अत:व्यंग्य हमेशा विशिष्ट उद्देश्य लेकर ही किया जाता है।व्यंग्य का लक्ष्य भूल सुधार कर दोषों को दूर करना ही है।इसलिए व्यंग्य आज एक लोकतांत्रिक विधा बन गई है। समाज की दर्द-पीडा से जुड कर शोषण के खिलाफ लोगों में चेतना जगा कर लडना व्यंग्य का दायित्व समझा जाता है।राजनीतिक व्यंग्य में राजनीतिकी गिरावट, शोषण,अन्याय,शासन और उसके विभिन्न अंगों में व्यक्त भ्रष्टाचार,कथनी-करनी में अंतर,घोरसांप्रदायिकता, बेरोज़गारी,भाई-भतीजावाद,रिश्वतखोरी आदि विषयों को लेकर व्यंग्यकार सूक्ष्म रूप में उसको चित्रित करता है।

1.3.केरल की हिंदी कविता में राजनीतिक व्यंग्य

विश्वभाषा हिंदीमें विश्व के विभिन्न प्रान्तों से मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हो रही है।हिंदी भाषाको समृद्ध बनाने में केरलके हिंदी साहित्यकारों का भीमहत्वपूर्ण योगदान रहा है।केरल के हिंदी कवियों ने समाज के विविध आयामों को बारीकी से अंकित करने मेंसफल सिद्ध हो गए हैं।अत: केरल की हिंदी कविता भी राजनीतिक प्रभावसे मुक्त नहीं है।

1.3.1.डॉ.जे.रामचन्द्रन् नायर

केरल के आधुनिक हिन्दी कवियों में बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ.जे.रामचन्द्रन् नायरकेरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम के निवासी हैं। उनकी कविता में व्यंग्य सहज रूप में विद्यमान है। उनके कविता संग्रह "इन्द्रप्रस्थ में गिद्ध" इसका एक ज्वलंत निशान है। उन्होंने अपनी कविता में राजनेताओं की दुहरी मनोवृत्ति, सत्ता का मोह, भ्रष्ट आचरण, राजनीतिक दबाव, अनावश्यक हस्तक्षेप, पद का दुरुपयोग आदि अनेक विषयों को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। आज लोकतंत्र एक दिखावा मात्र है। आजकल राजनीति का उद्देश्य जनता और देश की समस्याओं का सुलझाव नहीं रह गया है बल्कि नेताओं की व्यक्तिगत, पारिवारिक समस्याओं का सुलझाव हो गया है। धन, शक्ति, सम्मान आदि आकर्षणों ने राजनीति को सत्ता केन्द्रित बना दिया है। जो सत्तासीन है उसे अधिक सुविधाएँ प्राप्त है उसके लिए पागल बन कर ईमानदार, कर्मठ, ज्ञानी, देशभक्तों के स्थान पर तिकडमी, अयोग्य व्यक्तियोंकी दीर्घश्रृंखला राजनेताओं के रूप में विद्यमान है।इस सत्य पर एक व्यंग्य देखिए –

आज कलियुग में महामूर्ख
अपार चर्म क्षमता
मदिरा-मदिराक्षी में डूबकर
अत्याचारी नेता (राम का वरदान)

नैतिक पतन की पराकाष्ठा तक पहुंच गए भ्रष्ट नेता अपने स्वार्थ के लिए कहीं सांप्रदायिक,धार्मिक दंगे करवाते हैं तो कहीं आतंकवाद और अलगाववाद को प्रश्रय देते हैं।इनके बीच के दबाव में पड जाने वाले आम जनता की दुरवस्था पर एक व्यंग्य प्रस्तुत है –

अन्य राम घूर कर बैठते हैं,
बाहर रावण घूर कर बैठते हैं।
मैं किसके पक्ष में जाऊँ
राम के नाम पर हंगामा,
रावण के नाम पर हंगामा।
मैं किस केलिए जय बोलूँ
राम केलिए जय बोलूँ तो
हाथ पैर और श्वास नष्ट हो जाएगा।
रावण केलिए जय बोलें तो
सिर का नष्ट-महा कष्ट हो जाएगा। (राम और रावण)

1.3.2.डॉ.षण्मुखन

केरल के आधुनिक हिंदी कवियों मेंडॉ.षण्मुखनसूक्ष्म संवेदनाओं के चतुर चितेरे के रूप में विख्यात हैं।आप एरणाकुलम जिले में रहते हैं। भूमंडलीकरण के संदर्भ में राजनीति और भी संकीर्णहो गयी है।'ग्लोबल नज़रिए' परएक व्यंग्य देखिए-

बन जाता है हमारा नज़रिया ग्लोबल
हो जाते हैं हम अवगत कि
मानव का बंटवारा तो साजिश है

मानवता के खिलाफ
सचमुच,वर्तमान का नारा है-
दुनियाके तमाम नागरिक
एक हो
और गोलबंद हो
एक होने केलिए, बेशक ।(ज़माने की नारा)

1.3.3. डॉ .पी.वी.विजयन

डॉ .पी.वी.विजयन केरल के एरणाकुलम जिले के निवासी हैं। केरल के आधुनिक हिंदी कवियों में विजयनजी अपना अलग व्यक्तित्व रखने वाले हैं ।'नदी को बहने दो ' उनका काव्य संकलन हैं।राजनीति की विडंबनाओं पर उनकी कविता वज्रप्रहार करती हैं ।उनकी राय में 'चिपको' इस ज़माने का नारा बन गया है । सत्ता की अलग-थलग कुर्सियों पर जमते नेताओं का जीवन दर्शन बन गया है यह नारा ।हरएक नेता सत्ता की कुर्सी को एक बार पाने पर जिंन्दगी भर उस पर चिपकते रहना चाहता है ।अत: आज भरत कुरसी प्रधान देश बन गया है !कुर्सीधारी व्यक्ति की सबसे बडी विशेषता यह होती है कि चुनाव के दिनों में अपने चेहरे पर चार इंच चौडी मुस्कान चिपकाकर चलता है किन्तु चुनाव के बाद सत्ता का हिस्सा बन जाने के बाद वह अपने चेहरे पर अजनबीपन चिपकाकर वह आमजनता को दर्शन देता ।इस पर कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

चुनाव के दिनों में
चालाक राजनेता
अपने चेहरे पर चार इंच चौडी मुस्कान
चिपकाकर चलता है
क्योंकि उसे अपना अन्नदाता मतदाता से मिलना है
जिन्हें उसने बार-बार छला है । बहकाया है ।
चुनाव के बाद
जब यह चतुर राजनेता
सत्ता से जुडता है

और सत्ता का हिस्सा बन जाता है
तो अपने चेहरे पर
अजनबीपन चिपकाकर
वह आम जनता को दर्शन देता है। (ज़माने का नारा है)

1.3.4. डॉ.मनु

डॉ .मनु केरल के पहला 'यू टूब' कवि के रूप में विख्यात हैं ।वे केरल के तलश्शेरी में (कन्नूर जिला) रहते हैं।हिंदी,हिंदुस्तानी और उर्दू के शब्दों को मिलाकर चित्रात्मक शैली में कविता करने में वे मशहूर हैं।राजनीति पर व्यंग्य करते हुए वे कविताएँ लिखते हैं। उनकी राय में भारत का प्रजातंत्र वास्तविक नहीं है। अत: यहाँ का प्रजातंत्र एक मुखौटा मात्र है।यहाँ के प्रजातंत्र में कई विडंबनाएँ छिपी हुई है जो प्रजा को नहीं दिखाई देता है।अवसर पाते ही वह अपना यथार्थ रूप प्रकट करता है।जाली प्रजातंत्र में नेता राजा के समान है।नारी की स्थिति व सुरक्षा संकट में है।जन नेता शिकारी बनकर नारी का शिकार करता है अत: उस पर अत्याचार करता है तब नारी की रक्षा करने केलिए कोई नहीं आएगा। कानून भी इस प्रवृत्ति को अंधे आँखों से देखेंगे और बहरे हो कर चुप बैठेंगे। इस स्थिति पर एक व्यंग्य देखिए-

अहल्या के पत्थर बन जाने पर
क्यों किसी ने आवाज़ नहीं उठाई ?
रिशतेदार सब चुप
समाज सब चुप
औरत जात सब चुप
रियासत सब चुप
कानून सब चुप
क्योंकि शिकारी राजा है (अहल्या अदालत में)

1.3.5. डॉ.प्रमोद कोवप्रत

डॉ.प्रमोद कोवप्रत कोष़िक्कोड विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष हैं।वे केरल के युवा हिंदी कवियों में नामी हैं।राजनीति और राजनेताओं के पोल खोलने में उनकी कविता सक्षम है।

एक हायकु में चोर व मंत्री की प्रवृत्तिपर तुलना करके वे व्यंग्य किया है –

चोर व मंत्री

ढंग अपने काम

नतीजा एक !

वर्तमान युग के राजनीतिज्ञं की करनी और कथनी में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। 'हैप्पी न्यू ईयर' कविता में कवि ने इस विडंबना पर व्यंग्य किया है-

नव वर्ष में करनी - कथनी एक हो

राजनीतिक परंपरा सामने खडी थी ।(हैप्पी न्यू ईयर)

1.4.उपसंहार

केरल के दक्षिण, मध्य और उत्तर प्रान्त के कवियों की कविता का सामान्य एवं संक्षिप्त अध्ययन यहाँ हुआ है। संक्षेप में कह सकता है कि केरल की हिंदी कविता में राजनीतिक व्यंग्य खूब मात्रा में मिलते हैं। केरल के कवि अपनी कविता के माध्यम से राजनीति पर लगे कलंक को दूर करने के लिए जनता की चेतना को जगाने की प्रेरणा देते रहते हैं ।देश और जनता के हित के लायक राजनीति यहाँ लागू हो जाने के लिए वे सपना देख रहे हैं।

1.5. सहायक ग्रंथ सूची

1. व्यंग्य क्या,व्यंग्य क्यों - श्यामसुन्दर घोष – साहित्यिक प्रकाशन,दिल्ली,प्र.सं.1983.
2. इन्द्रप्रस्थ में गिद्ध-डॉ.जे.रामचंद्रन् नायर-फेबियन बुक्स,केरल,प्र.सं.2014.
3. सपना देखना मना है-डॉ.षण्मुखन-जवाहर पुस्तकालय,मथुरा,उ.प्र,प्र.सं.2010.
4. नदी को बहने दो - डॉ. पी. वी.विजयन- जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उ.प्र,प्र.सं.2001.
5. हम बेघर हैं - डॉ.मनु - अप्लाइड बुक्स, नई दिल्ली.प्र.सं.2015.
6. काव्य चयनिका - संपा. डॉ. प्रमोद कोवप्रत –लोकभारती प्रकाशन,नई दिल्ली.प्र.सं.2015.
7. संग्रधन (पत्रिका) - दिसंबर 1996, नवंबर 1998, फरवरी1999, तिरुवनन्तपुरम, केरल.
8. केरल के हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.पी.लता-लोकभारती,इलाहाबाद.प्र.सं.2016.